देश विदेश की लोक कथाऐं — मैं शादी नहीं करूँगी ः

मैं शादी नहीं करूँगी...

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title : Mein Shaadi Nahin Karoongi (I will not Marry)
Cover Page picture : I Will Not Marry You
Published Under the Ausoices of Akhul Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
To read many such stories : https://www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

दिसम्बर 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
मैं शादी नहीं करूँगी... 5
1 मोटिनू और बन्दर 7
2 एक सुन्दर लड़की और मछली 17
3 एक लड़की जिसने एक खोपड़ी से शादी की 24
4 सॉप दुलहा 31
5 होशियार राजकुमारी 45
6 घमंडी राजकुमारी 53
7 लड़की जो आम चीज़ों से सन्तुष्ट नहीं थी 60

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
दिसम्बर **2018**

मैं शादी नहीं करूँगी...

बहुत सारे समाजों में कई लड़के लड़कियॉ ऐसे होते हैं जिनको शादी के लिये कोई लड़की या लड़का पसन्द ही नहीं आता। अक्सर ऐसे लोगों को मुँह की खानी पड़ती है। हमने जो दुनियॉ भर से **1500** से अधिक लोक कथाऐं इकट्ठी की हैं उनमें कई लोक कथाऐं ऐसी ही हैं जिनमें अक्सर लड़कियों ने शुरू में शादी करने से इनकार कर दिया। पर जब उन्होंने शादी की तो उनको पछताना पड़ा।

यह किसी एक ही समाज की खासियत नहीं है बल्कि ऐसी लोक कथाऐं कई समाजों में सुनने में आती हैं। हमने इस पुस्तक में ऐसी ही कुछ लोक कथाऐं इकट्ठी की हैं जिनमें लड़कियों ने ऐसा ही किया है और उनको बाद में पछताना पड़ है। इन कथाओं को पढ़ो ओर देखो कि क्या तुम ऐसा करना पसन्द करोगे?

1 मोटिनू और बन्दर[1]

यह लोक कथा हमने नाइजीरिया के योरुबा लोगों की लोक कथाओं से ली है।

एक बार योरुबालैंड के ओवो शहर[2] में एक लड़की रहती थी जिसका नाम था मोटिनू[3]। मोटिनू बहुत ही ज़्यादा सुन्दर थी इसलिये बहुत सारे लड़के उससे शादी करने की इच्छा प्रगट कर चुके थे पर न जाने क्यों मोटिनू ने सभी को मना कर दिया था।

एक दिन वह पास के कुँए से पानी भर रही थी कि कुँए के पास उसने एक बड़े सुन्दर नौजवान को बहुत अच्छे कपड़े पहने बैठे देखा।

मोटिनू उसको देख कर आश्चर्य में पड़ गयी। इसलिये नहीं कि वह बहुत बहुत सुन्दर था या फिर वह बहुत अच्छे कपड़े पहने था बल्कि इसलिये कि वह नौजवान उसके लिये बिल्कुल अजनबी था। उसको विश्वास था कि वह ओवो शहर का नहीं था।

पर फिर उसने अपना पानी भरा और अपने घर वापस लौटने लगी। जब वह अपना पानी भर कर वापस लौट रही थी तो वह नौजवान उससे बोला — "मोटिनू, क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

---

[1] Motinu and Monkey – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, West Africa.

[2] Owo City of Nigeria

[3] Motinu – name of the Nigerian girl who did not want to marry anybody

मोटिनू ने आश्चर्य से पूछा — "मगर तुम मेरा नाम कैसे जानते हो?"

वह नौजवान बोला — "जो लड़की सारे लड़कों से शादी करने से इनकार कर दे उसे कौन नहीं जानेगा? मैं यहाँ अजनबी हूँ और मैं बहुत अमीर भी हूँ। मेरे बहुत सारे दोस्त भी हैं।

हालाँकि मेरे दोस्त इस शहर के नहीं हैं परन्तु वे सब बड़े ताकतवर हैं और चारों तरफ उनका बहुत दबदबा है। मेरा घर यहाँ से बहुत ज़्यादा दूर नही है। क्या तुम मेरे घर चलोगी और मेरे घर वालों से मिल कर मेरी पत्नी बनना पसन्द करोगी?"

मोटिनू उसको पसन्द करने लगी थी सो वह उसके घर जाने के लिये राजी हो गयी। वह जल्दी जल्दी घर लौटी, उसने अपना थोड़ा सा सामान लिया और उस अजनबी के साथ चल दी।

शहर से बाहर निकल कर वे जंगल में घुस गये। वह नौजवान बड़ी तेज़ी से चल रहा था और मोटिनू उसके साथ चल नहीं पा रही थी।

काफी दूर जाने के बाद भी जब उस नौजवान का घर नहीं आया और मोटिनू चलते चलते हाँफने लगी तो वह रुक कर बोली — "कहाँ है तुम्हारा घर? हम लोग तो बहुत दूर निकल आये हैं।"

वह नौजवान जल्दी जल्दी चलते हुए बोला — "बस तुम मेरे पीछे पीछे आती रहो मोटिनू। मेरा घर अब ज़्यादा दूर नहीं है।"

आखिर मोटिनू चलते चलते जब बहुत थक गयी तो उस नौजवान ने उसे घास पर बिठा दिया। मोटिनू को यह जगह कुछ नयी नयी सी लगी क्योंकि वह इधर पहले कभी नहीं आयी थी पर फिर भी वह उस नौजवान के साथ चलती रही।

कुछ दूर जा कर वह नौजवान बोला — "तुम यहीं बैठ कर मेरा इन्तजार करो मैं अपने परिवार वालों को यहीं बुला कर ले आता हूँ।" और यह कह कर वह भागता दौड़ता जंगल में गायब हो गया।

मोटिनू को यह सब देख कर कुछ घबराहट सी हुई और वह पछताने लगी कि वह इस अजनबी के साथ आयी ही क्यों। उसकी तेज़ चाल ढाल से उसको कुछ जरा ज़्यादा ही डर लग रहा था पर अब क्या हो सकता था अब तो वह उसके साथ आ ही गयी थी।

वह यही सब सोच रही थी कि वह नौजवान जहाँ गायब हुआ था उसी जगह उसको एक बहुत बड़ा बन्दर दिखायी दिया। वह कूदता फाँदता आया और आ कर मोटिनू के पास बैठ गया। मोटिनू उसकी तरफ आश्चर्य से देखने लगी।

अचानक वह बोला — "मोटिनू मैं ही तुम्हारा पति हूँ। मैं यहाँ रहता हूँ और अब तुम मेरी पत्नी की तरह यहीं रहोगी। तुमने देखा कि मेरे पास कितनी ताकत है कि मैं अपने आपको जब चाहूँ आदमी

के रूप में बदल सकता हूँ और जब चाहे मैं बन्दर बन सकता हूँ। लेकिन मैं अपने दोस्तों के बीच बन्दर बन कर रहना ही ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

यह सब सुन कर मोटिनू तो बहुत ही डर गयी और रोने लगी। इस पर बन्दर ने उसे अपने अगले पंजों से थपथपाया।

मोटिनू को लगा कि अगर उसने अपनी देखभाल ठीक से नहीं की तो यह बन्दर तो उसको मार ही डालेगा इसलिये उसने तय किया कि वह अभी तो इस अजीब जानवर की हर बात मान लेगी पर बाद में उससे पीछा छुड़ाने की कुछ और तरकीब सोचेगी। उसने रोना छोड़ कर फिर ऐसा ही किया।

बन्दर तो यह देख कर खुशी के मारे किलकारी मारने लगा और कूदने लगा। उसकी किलकारी की आवाज सुन कर दूसरे बन्दरों ने भी कहीं दूर से किलकारियाँ मारीं और कुछ ही देर में तो वहाँ बहुत सारे बन्दर इकट्ठा हो गये।

सब वहीं घास पर चुपचाप शान्ति से बैठ गये। कुछ तो मोटिनू को इधर उधर से देख रहे थे, कुछ घास से खेल रहे थे और कुछ अक्लमन्दों की तरह गम्भीर बने बैठे थे।

जब वहाँ बहुत सारे बन्दर इकट्ठा हो गये तो वह बोलने वाला बन्दर यानी मोटिनू का पति एक पेड़ की ऊँची सी डाल पर जा कर बैठ गया और सब बन्दरों की तरफ मुँह करके कुछ बोला।

वह क्या बोला यह तो मोटिनू की समझ में नहीं आया परन्तु उसके हावभाव से लग रहा था वह उन बन्दरों से उसी के बारे में कुछ कह रहा था। जब वह अपनी बात कह चुका तो सभी बन्दरों ने देर तक अपनी गरदन हिलायी।

उसके बाद मोटिनू की तरफ मुँह करके उसने कहा — "मेरा परिवार इस बात पर राजी हो गया है कि तुम यहाँ मेरी पत्नी की तरह रह सकती हो। अब तुम मेरी बात जरा ध्यान दे कर सुनो जो मैं तुमसे कहता हूँ फिर तुम पर कोई मुसीबत नहीं आयेगी।

तुमको यहीं इन जंगलों में मेरे साथ रहना पड़ेगा और तुम कभी भी आदमी और उसके शहर की तरफ नहीं लौट पाओगी। हम लोग तुमको एक ढोल देंगे जब हम नाचेंगे तब तुम वह ढोल बजाओगी।

तुमको यहाँ कोई खास काम नहीं करना पड़ेगा क्योंकि हम लोग आदमी की तरह पका हुआ खाना नहीं खाते। हाँ तुमको हमारे लिये ताजा जंगली फल और पानी जरूर लाना पड़ेगा।"

और मोटिनू वहाँ बन्दरों के साथ रहने लगी। उन्होंने उसको एक लकड़ी का ढोल ला दिया था। रोज सुबह वह ढोल बजाती और बन्दर नाचते।

फिर वह पानी भरने और ताजा भुट्टे[4] लाने जाती। खा पी कर बन्दर जंगल में घूमने चले जाते और मोटिनू को तीसरे पहर में कुछ आराम मिल जाता।

शाम को वापस आ कर वे बन्दर मोटिनू के ढोल पर फिर से नाचते। हालॉकि वे बन्दर मोटिनू को कुछ कहते नहीं थे फिर भी मोटिनू उनसे कुछ डरी डरी सी रहती और उनको खुश रखने के लिये जो कुछ भी कर सकती थी करती रहती।

एक दिन मोटिनू जब बन्दरों के लिये भुट्टे इकट्ठा कर रही थी तो उसने एक शिकारी को पास से गुजरते हुए देखा। उसको देख कर मोटिनू बहुत ही खुश हुई। उसने धीरे से उस शिकारी को पुकारा।

उधर वह शिकारी भी इतनी सुन्दर लड़की को शहर से इतनी दूर जंगल में अकेली देख कर हैरान रह गया। मोटिनू ने उससे कहा कि वह बड़ी मुश्किल में थी और उसे उसकी सहायता चाहिये।

इस डर से कि कहीं बन्दर उसको देख न लें उसने उस शिकारी को अगले दिन तीसरे पहर के समय आने के लिये कहा।

अगले दिन वह शिकारी तीसरे पहर के समय आया। मोटिनू उस समय अकेली थी। उसने शिकारी को अपनी सारी कहानी सुनायी और कहा कि अगर वह उसको इन बन्दरों के चंगुल से छुड़ा लेगा तो वह उससे शादी भी कर लेगी।

[4] Translated for the words “Ear Corn” – see its picture above.

शिकारी ने उसकी सब बातें बड़े ध्यान से सुनी और जो कुछ भी वह उसके लिये कर सकता था करने का वायदा किया। शिकारी ने मोटिनू से कहा कि वह बन्दरों के साथ ऐसे ही रहती रहे जैसे वह अब तक रह रही थी और वह उससे बाद में आ कर मिलता है।

ओवो लौटने पर शिकारी ने एक बढ़ई को बुलाया और उसको मोटिनू के बाल बनाने का ढंग बताया और चेहरे के कुछ निशान बताये। और उससे कहा कि वह मोटिनू की शक्ल की लकड़ी की आठ छोटी छोटी मूर्तियॉ बना दे।

जब वे मूर्तियॉ बन गयीं तो उनको मोटिनू जैसा रंगा गया। शिकारी उन मूर्तियों को ले कर मोटिनू के पास गया और उससे अकेले में मिला।

वहॉ से उसने मोटिनू को लिया और उसको ले कर ओवो की तरफ जल्दी जल्दी चला। हर कुछ मील के बाद वह मोटिनू की एक मूर्ति सड़क पर डालता जाता था।

उस शिकारी का नाम था ओगुनयेमी[5]। उसको यह मालूम था कि जब भी बन्दर उनका पीछा करेंगे तो ये मूर्तियॉ उनको ओवो पहुँचने में देर लगायेंगी। और शिकारी ने ठीक ही सोचा था।

कुछ देर बाद जब बन्दर शाम के नाच के लिये घर लौटे तो उन्होंने देखा कि वहॉ तो कोई भी नहीं है। ढोल भी चुपचाप एक

[5] Ogunyemi – name of a Nigerian man

तरफ को पड़ा है और मोटिनू का भी कहीं पता नहीं है। गुस्से में भर कर वे सब ओवो की तरफ चल दिये।

कुछ दूर जाने पर रास्ते में उनको मोटिनू की एक मूर्ति पड़ी मिली। उनको लगा कि वह मोटिनू थी। उन्होंने उसको उठा लिया और उसे उत्सुकता से देखना और उसके बारे में बात करना शुरू कर दिया।

एक बोला — "यह क्या है जो मोटिनू से इतनी ज़्यादा मिलती जुलती है?"

वे लोग जब उस मूर्ति को उलट पलट कर देख रहे थे तो बड़े अक्लमन्द लग रहे थे। उन्होंने उसको जमीन पर भी लुढ़काया, उससे खेले भी परन्तु उनको यह किसी तरह भी पता न चल सका कि वह चीज़ क्या थी।

जब वे उससे खेलते खेलते थक गये तो उन्होंने उसको एक झाड़ी में फेंक दिया और मोटिनू को ढूँढने आगे चले।

आगे चल कर उनको मोटिनू की दूसरी मूर्ति मिली। उसको देख कर उनमें और ज़्यादा बातें और बहस होने लगीं। कुछ बोले कि यह तो वही चीज़ है जो उन्होंने पहले देखी थी और जादू से यहाँ उनके सामने फिर से आ गयी है।

मामला सुलझाने के लिये वे लोग फिर से पहली जगह गये और उस फेंकी हुई मूर्ति को वहीं पा कर सन्तुष्ट हो कर फिर आगे बढ़े।

इस तरह आगे मिलने वाली हर मूर्ति उनके गुस्से को बढ़ाती रही। आठवीं मूर्ति तक आते आते उनका गुस्सा इतना ज़्यादा बढ़ गया कि उन्होंने उसको खूब कुचला खूब कुचला और तोड़ कर फेंक दिया।

इतनी देर में मोटिनू और ओगुनयेमी दोनों उन बन्दरों के चंगुल से निकल कर ओवो पहुँच गये। पर इतना सब करने के बाद भी वे केवल ओवो तक ही पहुँच पाये थे कि उन्होंने अपने पीछे आती हुई बन्दरों की ज़ोर की किलकारियाँ सुनी। वे बन्दर मोटिनू की आठवीं मूर्ति को तोड़ कर वहाँ आ पहुँचे थे।

जब बन्दर ओवो शहर की चहारदीवारी तक पहुँचे तो दूसरे बन्दरों की तो अन्दर जाने की हिम्मत नहीं हुई परन्तु मोटिनू का पति फिर से सुन्दर नौजवान बन कर उस शहर के अन्दर चला गया और ओगुनयेमी के घर पहुँच गया।

मोटिनू ने उसे देखा तो पहचान गयी। उसने ओगुनयेमी को बताया कि वह नौजवान कौन था।

ओगुनयेमी ने यह सब मामला अपने सरदार को बताया तो सरदार ने उस नौजवान को जंजीरों से बँधवा दिया और क्योंकि वह फिर जंगल नहीं लौट सका इसलिये वह अपने आपको फिर से बन्दर में भी नहीं बदल सका।

ज़िन्दगी के बाकी दिन उसको सरदार की सेवा में ही काट देने पड़े। उधर मोटिनू ने ओगुनयेमी से शादी कर ली और वे भी खुशी खुशी रहने लगे।

2 एक सुन्दर लड़की और मछली[6]

यह लोक कथा अफ्रीका के नाइजीरिया देश की योरुबा जनजाति में कही सुनी जाती है।

बहुत पुरानी बात है जब नाइजीरिया में हर जगह जादू का बोलबाला था वहॉ के एक गॉव में एक बहुत सुन्दर लड़की रहती थी।

उस गॉव के बहुत सारे लड़के उससे शादी करना चाहते थे परन्तु उसने सारे लड़कों को मना कर दिया था। उसका कहना था कि उसका पति तो बहुत ही ज़्यादा सुन्दर होना चाहिये।

एक दिन जब वह बाजार में घूम रही थी तो उसने सचमुच में एक बहुत ही सुन्दर लड़का देखा और तुरन्त ही उसको उस लड़के से प्रेम हो गया।

वह उस लड़के के पास गयी और उसको बताया कि किस तरह वह उसकी सुन्दरता पर रीझ गयी थी और अब उससे शादी करना चाहती थी।

उस अजनबी ने जवाब दिया — "मैं तुमसे शादी करके बहुत ही खुश होता परन्तु बदकिस्मती से मैं इन्सान नहीं हूॅ और तुम लोगों में से एक भी नहीं हूॅ।

[6] The Beautiful Girl and the Fish – a folktale of Yoruba Tribe from Nigeria, Africa

मैं एक मछली हूँ और मैं इडुनमायबो[7] में जो नदी है उसमें रहता हूँ। देवताओं ने मुझे एक ऐसी ताकत दे रखी है जिससे मैं जब चाहूँ अपने आपको एक आदमी के रूप में बदल सकता हूँ पर मेरा घर तो नदी ही है और मैं फिर वहीं वापस चला जाऊँगा।"

यह सुन कर लड़की बोली — "कोई बात नहीं, चाहे तुम मछली हो या आदमी पर मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। अगर तुम समय समय पर पानी से निकल कर इसी रूप में मेरे पास आने का वायदा करो तो मैं तुमसे खुशी खुशी शादी कर लूँगी।"

मछली आदमी बोला — "हाँ ऐसा तो हो सकता है। ठीक है फिर ऐसा ही होगा।"

और ऐसा कह कर वह उस लड़की को इडुनमायबो की तरफ ले चला। वहाँ पहुँच कर वह एक नदी के पास एक जगह पर रुका और बोला — "यही मेरा घर है। तुम जब भी मुझे बुलाना चाहो तो मैं तुमको जादू का एक गीत बता देता हूँ, उसे गाना तो मैं तुम्हारे पास इसी रूप में चला आऊँगा।

वह गीत है —

ओ नदी की सुन्दर मछली क्या मैं इस बहते पानी में से देख सकती हूँ
नदी की सतह से मैं तुम्हें देखूँगी ओ प्यारी नदी जो चाँदी और रत्न जैसी लगती है
जिसके नीचे महल है जो आदमियों के महल से भी ज़्यादा सुन्दर है।

[7] Idunmaibo – name of a place

यह कह कर वह मछली आदमी नदी में कूद पड़ा और गायब हो गया। लड़की भी वहॉ से चली गयी।

बाद में वह लड़की अपने प्रेमी के लिये रोज कुछ मिठाई बनाती और इडुनमायबो ले जाती। वहॉ जा कर वह जादू भरा गीत गाती और मछली पानी की सतह पर दिखायी देने लगती।

फिर वह मछली अपने आपको आदमी के रूप में बदल कर किनारे पर आ जाती। तब दोनों कुछ समय साथ में गुजारते।

जब वह आदमी नदी में से बाहर आता तो बहुत तरीके के मूँगे और रत्न ले कर आता और अपनी पत्नी को भेंट करता। वे लोग आपस में बहुत खुश थे और एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

जब लड़की के माता पिता ने देखा कि लड़की बड़ी होती जा रही है और वह किसी से शादी नहीं कर रही है तो उन्होंने उससे पूछा कि क्या उसकी निगाह में कोई ऐसा आदमी था जिससे वह शादी करना चाह रही हो।

तो लड़की ने जवाब दिया कि एक आदमी उसका पति था तो पर वह अभी उसके बारे में उनको बता नहीं सकती थी।

इस जवाब से वे बड़े परेशान हुए। वे उसको देखते रहते कि वह अपने पति के लिये खाना बनाती और उसे ले जाती।

उसके छोटे भाई ने उससे कई बार कहा कि वह उसके साथ चलेगा परन्तु लड़की ने कहा कि नहीं, यह काम वह अकेले ही करेगी और कोई उसके पीछे भी नहीं आये।

पर इस जवाब ने उस लड़के की उत्सुकता और जगा दी और एक दिन उसने तय कर लिया कि वह उसके पीछे पीछे जायेगा और देखेगा कि वह कहाँ जाती है और उस खाने का क्या करती है।

जादू से उसने अपने आपको एक मक्खी के रूप में बदला और अपनी बहिन के पीछे पीछे उड़ चला।

उसने देखा कि उसकी बहिन इडुनमायबो की तरफ गयी और वहाँ जा कर नदी के पास पहुँच कर उसने जादू का एक गीत गाया।

फिर एक मछली नदी की सतह पर आयी और वह एक सुन्दर नौजवान बन कर नदी के किनारे पर आ गयी। दोनों ने मिल कर खाना खाया, कुछ देर बातें कीं और फिर वह सुन्दर नौजवान नदी में कूद कर गायब हो गया।

लड़के ने उस जादुई गीत के बोल याद कर लिये और तुरन्त ही घर की तरफ उड़ चला। घर आ कर उसने अपने आपको फिर से लड़के के रूप में बदला और भागा भागा सीधा अपने माता पिता के पास गया।

उसने नदी के किनारे जो कुछ देखा था उसका पूरा हाल उनको सुना दिया और कहा कि उनकी बेटी ने तो एक मछली से शादी कर रखी है।

माता पिता यह सब सुन कर गुस्सा भी हुए और मन ही मन दुखी भी हुए। उन्होंने तय किया कि वे अपनी बेटी को अभी कुछ

नहीं कहेंगे। वे अपनी बेटी को उसके बाबा के घर भेज देंगे और उसके जाने के बाद सोचेंगे कि उन्हें क्या करना चाहिये।

सो उस लड़की को उसके बाबा के घर भेज दिया गया। उसके बाबा का घर वहाँ से काफी दूर था और वहाँ से वह इतनी दूर आ कर अपने पति से नहीं मिल सकती थी।

जब लड़की चली गयी तब उन्होंने अपने बेटे से कहा कि वह उनको उस नदी के किनारे ले चले और वहाँ जा कर वह जादुई गीत गाये। बेटे ने ऐसा ही किया। वे सब नदी के किनारे पहुँचे और लड़के ने अपनी बहिन की आवाज में वह जादुई गीत गाया।

गीत सुन कर वह मछली पानी के ऊपर आयी और एक सुन्दर नौजवान का रूप रख कर नदी के किनारे पर कूद गयी। पिता एक झाड़ी के पीछे खड़ा था।

जैसे ही मछली नौजवान के रूप में नदी के किनारे पर कूदी पिता ने अपने हँसिये से उसे मार डाला और उसे पानी में वापस फेंक दिया। आश्चर्य, वह नौजवान पानी में गिरने के बाद धीरे धीरे फिर से मछली के रूप में आ गया।

पिता यह देख कर चिल्लाया — "मैं अपनी बेटी को इस बुरे काम की सजा जरूर दूँगा।"

उसने अपने बेटे को वह मरी हुई मछली पानी से बाहर निकाल कर घर ले चलने के लिये कहा। घर जा कर उन्होंने उस मछली को सुखाया और लड़की के वापस आने तक रख दिया।

दो दिन बाद लड़की खुशी खुशी घर वापस लौटी कि अब वह नदी के पास जा कर अपने पति से फिर से मिल सकेगी।

वह घर आते ही नदी पर जाने के लिये तैयार हुई तो उसके पिता ने कहा — "पहले कुछ खा लो। तुम्हारी माँ ने तुम्हारे लिये बहुत ही स्वाद मछली पकायी है।"

लड़की बोली — "पिता जी मुझे भूख भी नहीं है और मैं मछली भी नहीं खाना चाहती।"

पिता ने उसको डाँटा — "जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करो। चलो बैठो और पहले खाना खाओ।"

लड़की बेचारी दुखी सी चुपचाप बैठ गयी और मछली खाने लगी। जैसे ही वह मछली खाने लगी कि उसने अपने भाई को गुनगुनाते हुए सुना।

उसका गाना सुन कर तो वह हक्का बक्का रह गयी। उसके हाथों से खाने का कटोरा गिर गया और वह उसको भौंचक्की सी देखती रह गयी।

उसके भाई ने अपना गीत फिर दोहराया —

कितनी बुरी बात है स्त्रियों के लिये अपने पति का माँस खाना
जबकि वे अपने पति को बहुत प्यार करती हैं
क्योंकि उनके पीछे उनके पति नदी में से निकाल लिये गये हैं
मछली के रूप में परिवार के खाने के लिये

लड़की यह गीत सुन कर तुरन्त नदी की तरफ दौड़ी गयी और उसने अपना जादुई गीत गाया पर उसका पति नदी से बाहर नहीं आया। फिर उसने एक और गीत गाया —

ओलूवेरी[8] ओलूवेरी ओ नदी देवी
मैं अपनी चॉदी जैसी ऑखें और सितारों जैसे बाल लिये लौटी हूँ
अगर मेरा पति मर गया है तो नदी की पानी की सतह लाल हो जाये
और अगर मेरा पति ज़िन्दा है तो वह बाहर आये
और आ कर अपनी प्रेमिका को देखे
जिसको कठोरता के साथ इतनी दूर भेज दिया गया था

उसी समय नदी का पानी लाल हो गया और लड़की जान गयी कि उसके पिता ने उसके पति को मार डाला है। वह तुरन्त नदी में कूद गयी। पर वह डूबी नहीं बल्कि नीचे बैठती चली गयी और मत्स्यांगना बन गयी।

लोगों का कहना है कि आज भी कभी कभी एक मत्स्यांगना नदी में गुनगुनाती सुनायी पड़ती है।

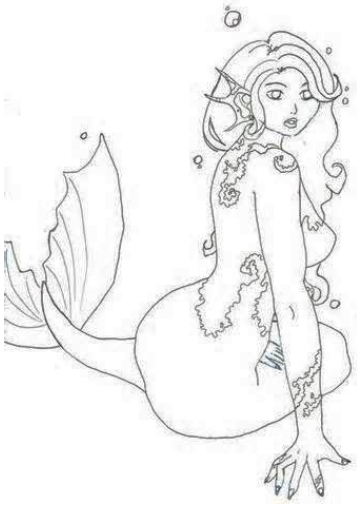

[8] Oluweri – the goddess of the Rivers

3 एक लड़की जिसने एक खोपड़ी से शादी की[9]

ऐफियोंग एडेम कोभम शहर[10] का रहने वाला था। उसके एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी जिसका नाम था अफियोंग[11]। देश के सारे नौजवान उसकी सुन्दरता की वजह से उससे शादी करना चाहते थे पर उसने अपने माता पिता के कहने के बावजूद उन सब नौजवानों को मना कर दिया था।

वह बहुत ही जिद्दी किस्म की लड़की थी उसका कहना था कि वह देश के किसी ऐसे नौजवान से शादी करेगी जो सबसे सुन्दर हो, जवान हो और उसे ठीक से प्यार करे।

बहुत सारे लोग जिनसे उसके माता पिता उसकी शादी करना चाहते थे वे सब उससे उम्र में काफी बड़े थे और देखने में सुन्दर भी नहीं थे। इसलिये वह अपने माता पिता को उन सबके लिये मना करती रही। उसके माता पिता उसकी इस हरकत से बहुत दुखी और परेशान थे।

एक खोपड़ी जो आत्माओं की दुनियॉ में रहती थी उसने भी इस सुन्दर कुँआरी कैलेबार लड़की के

[9] The Disobedient Daughter Who Married a Skull (Tale No 8) – a folktale from Southern Nigeria, West Africa.
Adapted from the book : "Folktales From Southern Nigeria" by Elphinstone Dayrell. 1910. Contains 40 stories.
This book is available at: http://www.worldoftales.com/Nigerian_folktales.html

[10] Effiong Edem of Cobham town

[11] Afiong is the name of the daughter of Effiong Edem

बारे में सुना। उसने सोचा कि उसको वहाँ जाना चाहिये और उसको अपने काबू में कर लेना चाहिये।

सो वह अपनी साथिन आत्माओं के पास गयी और उनसे उनके शरीरों के सबसे सुन्दर हिस्से लिये। एक से उसने बहुत अच्छा सिर लिया, दूसरे से शरीर लिया, तीसरे से मजबूत बाँहें लीं, चौथे ने उसको सुन्दर टाँगें दीं।

जब उसने एक आदमी के शरीर को जिन जिन हिस्सों की जरूरत होती है वे सब उनसे ले लिये तो वह एक बहुत ही सुन्दर नौजवान बन कर कोभम के बाजार में गया।

वहाँ उसको अफियोंग दिखायी दे गयी तो उसने अपने मन में उसकी सुन्दरता की बहुत तारीफ की कि वाकई वह बहुत सुन्दर लड़की थी।

उन्हीं दिनों अफियोंग ने भी सुना कि शहर में एक बहुत ही सुन्दर नौजवान आया हुआ है जो उसके शहर के सभी नौजवानों से काफी अलग है। सो एक दिन वह बाजार गयी और उस खोपड़ी को उसकी उधार ली हुई सुन्दर शक्ल में देखा।

उसको देखते ही वह उससे प्यार करने लगी और उसको उसने अपने घर आने की दावत दी। खोपड़ी तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गयी और उसके साथ उसके घर चल दी।

घर ले जा कर अफियोंग ने उसको अपने माता पिता से मिलवाया और खोपड़ी ने तुरन्त ही उनसे अफियोंग से शादी करने की इजाज़त चाही।

पहले तो अफियोंग के माता पिता ने एक अजनबी से अफियोंग की शादी करने से इनकार कर दिया पर फिर अपनी बेटी की पसन्द देखते हुए वे राजी हो गये।

वह खोपड़ी अफियोंग और उसके माता पिता के साथ उसके घर में दो दिन रही फिर उसने उसके माता पिता से कहा कि अब वह अपने घर जाना चाहती थी जो वहाँ से बहुत दूर था।

लड़की तो इस बात के लिये तुरन्त ही तैयार हो गयी क्योंकि वह एक अच्छा लड़का था पर उसके माता पिता की इच्छा अपनी लड़की को इस तरह भेजने की नहीं थी।

पर जैसा कि तुम्हें मालूम है कि वह लड़की बहुत जिद्दी थी सो वह अपने माता पिता का कहना न मान कर उसके साथ चल दी।

जब उन दोनों को गये हुए कुछ दिन हो गये और उन लोगों की कोई खबर नहीं मिली तो एफियोंग एक जू जू करने वाले[12] के पास गया और उससे अपनी बेटी के बारे में कुछ बताने के लिये कहा।

[12] Ju Ju people of Nigeria are like Ojha of India who help to cure the patients of Black Magic and even to do Black Magic themselves on somebody – Jaadoo Tonaa.

अपनी कौड़ियों[13] से काफी सारे दॉव फेंकने के बाद उसने एफियोंग को बताया कि वह लड़का आत्माओं की दुनियॉ से आया था और उसकी बेटी को ले गया है। अब उसकी बेटी यकीनन मारी जायेगी सो वे उसका दुख मनाना शुरू कर दें।

उधर कई दिनों तक चलने के बाद अफियोंग और उसके पति ने इस दुनियॉ और आत्माओं की दुनियॉ के बीच की सीमा पार की।

जैसे ही वे आत्माओं की दुनियॉ में पहुँचे टॉग वाली आत्मा खोपड़ी से अपनी टॉग मॉगने आ गयी, सिर वाली आत्मा ने अपना सिर मॉगा और शरीर वाली आत्मा ने अपना शरीर।

इस तरह से मॉगा हुआ सब कुछ दे देने के बाद वह खोपड़ी अकेली अपने असली भद्दे रूप में खड़ी रह गयी।

यह देख कर अफियोंग तो सकते में आ गयी। उसका मन घर भागने को करने लगा मगर उस खोपड़ी ने उसको वहॉ से जाने ही नहीं दिया और उसको अपने साथ चलने का हुकुम दिया। सो अफियोंग को उसके साथ ही जाना पड़ा।

जब वे खोपड़ी के घर आये तो अफियोंग खोपड़ी की मॉ से मिली। उसकी मॉ बहुत बूढ़ी थी और कोई काम करना तो दूर वह तो हिल भी नहीं सकती थी।

[13] Translated for the word “Cowries”. They are the sea shells – see their picture above.

अफियोंग से उसकी जितनी सहायता उससे हो सकती उसने उसकी उतनी सहायता की। उसका खाना बनाया, आग जलाने के लिये लकड़ी लायी, पानी भर कर ला कर दिया। वह बुढ़िया इस सबसे बहुत खुश हुई और जल्दी ही अफियोंग को बहुत चाहने लगी।

एक दिन वह अफियोंग से बोली कि वह उसके लिये बहुत दुखी थी क्योंकि उसके देश में तो सारे लोग आदमी खाने वाले थे। अगर किसी को पता चला कि उनके देश में कोई आदमी है तो वे तुरन्त ही आ जायेंगे और उसे मार कर खा जायेंगे।

अब क्योंकि अफियोंग ने उसकी बहुत सेवा की थी और वह उससे खुश भी बहुत थी तो उसने अफियोंग को अपने घर में छिपा लिया और उससे वायदा किया कि अगर आगे से वह अपने माता पिता का कहना मानेगी तो उससे जितनी जल्दी हो सकेगा वह उसको उसके देश वापस भेजने की कोशिश करेगी।

अफियोंग ने उससे वायदा किया कि वह आगे से अपने माता पिता का कहना मानेगी। सो उस खोपड़ी की माँ ने एक मकड़े को बुलाया जो बहुत ही अच्छे बाल बनाता था। उसने उससे अफियोंग के बहुत ही बढ़िया बाल बनाने को कहा।

उसने फिर उसको पहनने के लिये बहुत सुन्दर सी पाजेब[14] दीं और कुछ और गहने भी पहनने के लिये दिये। फिर उसने एक जू जू बना कर उसको पहनाया और हवा को उसे उसके देश ले जाने के लिये कहा।

पहले एक बहुत तेज़ तूफान आया, फिर गरज आया, फिर बिजली आयी और फिर बारिश आयी पर खोपड़ी की मॉ ने सबको वापस भेज दिया क्योंकि वे सभी अफियोंग को उसके घर ले जाने के लिये ठीक नहीं थे।

सबसे बाद में जब ठंडी खुशबूदार मन्द बहने वाली हवा आयी तो खोपड़ी की मॉ ने उसको अफियोंग को उसके घर ले जाने के लिये ठीक समझा सो उसने उसको अफियोंग को उसके घर छोड़ कर आने के लिये कहा और अफियोंग को विदा दी।

तुरन्त ही उस हवा ने अफियोंग को उसके घर के बाहर छोड़ दिया और वापस आ गयी।

जब अफियोंग के माता पिता ने अपनी बेटी को देखा तो वे तो खुशी से पागल से हो गये क्योंकि कुछ महीनों से तो उन्होंने उसके मिलने की उम्मीद बिल्कुल ही छोड़ दी थी।

[14] Translated for the word “Anklets”. This ornament is worn on the foot and is very common in India – see its picture and the way it is worn above.

उसके मिलने की खुशी में उसके पिता ने जहॉ वह खड़ी थी वहॉ से घर के दरवाजे तक उसके चलने के लिये मुलायम खालें बिछा दीं ताकि उसकी बेटी के पैर जमीन पर चलने से गन्दे न हों।

अफियोंग उन खालों पर चल कर घर तक आयी। उसके पिता ने तब उसकी सब सहेलियों को गाने नाचने और दावत के लिये बुलाया और यह सब आठ दिन तक दिन रात चला।

जब यह सब खत्म हो गया तो अफियोंग के पिता ने सारा मामला जा कर शहर के सरदार को बताया। सब कुछ सुनने के बाद सरदार ने यह कानून बना दिया कि कोई भी माता पिता अपनी बेटी की शादी किसी अजनबी से नहीं करेंगे।

अफियोंग के पिता ने फिर उससे अपने एक दोस्त से शादी करने के लिये कहा और अफियोंग राजी हो गयी। वे दोनों बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे। उनके कई बच्चे भी हुए।

4 सॉप दुलहा[15]

यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका के बिनीन देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक गॉव में अलाबी[16] नाम का एक आदमी अपनी पत्नी के साथ रहता था। वे बहुत अमीर थे। उनके पास कई एकड़ जमीन थी, बहुत सारे नौकर चाकर थे और उनके बहुत सारे दोस्त थे पर उनके कोई बच्चा नहीं था।

वे रोज भगवान से प्रार्थना करते कि उनके एक बच्चा हो जाये। आखिर एक दिन भगवान ने उनकी प्रार्थना सुन ली और समय आने पर उनके एक सुन्दर सी बेटी हुई।

क्योंकि पति पत्नी बहुत अमीर थे इसलिये उन्होंने अपनी बेटी को बहुत लाड़ प्यार से पाला। उन्होंने उसको वह सब कुछ दिया जो वह चाहती थी। अगर वह कुछ गलती भी करती थी तो उन्होंने उसको उसके लिये कभी डॉटा नहीं। इस तरह जैसे जैसे उनकी बेटी बड़ी होती गयी वह बिगड़ती चली गयी।

जब वह लड़की शादी के लायक हो गयी तो बहुत सारे आदमी अमीर और गरीब और राजकुमार और भिखारी उससे शादी करने के लिये आये पर उसने उन सबको मना कर दिया।

---

[15] The Serpent Groom – a folktale from Fon, Benin, West Africa. Adapted from the Book "The Orphan Girl and the Other Stories. By Offodile Buchi. 2001.

[16] Alabi – a Nigerian name of a man

यह लड़की यह सोचती थी कि वह सबसे कुछ अलग करके जियेगी। उन दिनों उस देश की यह रीति थी कि लड़के का पिता लड़की के पिता से मिल कर शादी तय करता था सो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि यह लड़की किसी से भी सलाह लेना नहीं चाहती थी।

और यह लड़की शादी तो बिल्कुल भी नहीं करना चाहती थी क्योंकि दूसरे लोग यह सोचते थे कि शादी करना अच्छा है।

उसने अपने पिता से कहा — "मैं उस आदमी से शादी कैसे कर लूँ जिसको मैंने देखा तक नहीं। इसके अलावा मेरे लिये कोई भी आदमी इतना सुन्दर और अमीर नहीं है जिससे मैं शादी करूँ। वे तो मेरे नौकर होने के लायक भी नहीं हैं।"

आदमियों के लिये उसके ऐसे विचार उन पति पत्नी को बहुत परेशान कर रहे थे। उन्होंने उसके विचार बदलने की कोशिश भी की पर उसने उनकी एक न सुनी क्योंकि उसने किसी की सलाह लेनी और माननी तो सीखी ही नहीं थी। वह तो बस अपने ही मन की करती थी।

सो कई साल बीत गये और उस लड़की ने शादी नहीं की। वह सुन्दर लड़की सारे गॉव में "वह लड़की जो शादी नहीं करना चाहती" के नाम से मशहूर हो गयी।

गॉव के आदमियों ने तो अब उससे शादी करने का विचार ही छोड़ दिया। सारे गॉव में अब उसकी सुन्दरता की बजाय उसके इसी बरताव के चर्चे होने लगे कि वह शादी नहीं करना चाहती।

किसी से भी उसकी सुन्दरता की बात करो तो वह यही कहता था — "अरे वह लड़की? हॉ, वह सुन्दर तो जरूर है पर वह तो वह मुर्गी है जिसको हम भगवान पर भी नहीं चढ़ा सकते।"

धीरे धीरे गॉव में अब यह विश्वास हो गया कि यह लड़की वह नहीं है जिससे कोई शादी करना चाहेगा।

जल्दी ही उसकी यह खबर कि वह आदमियों के साथ ठीक से बरताव नहीं करती है दूर और पास सभी जगह फैल गयी। यहॉ तक कि भूतों और शैतानों और जंगली जानवरों[17] की दुनियॉ में भी फैल गयी।

उस लड़की के बारे में यह सब सुन कर एक दिन एक अजगर अपने साथियों से बोला — "यह लड़की मुझे चाहिये।"

उसके एक साथी ने कहा — "तुम तो बहुत ही बदसूरत हो। उसने तो बहुत सुन्दर सुन्दर लोगों को मना करके ठुकरा दिया है तुम उन लोगों के सामने क्या चीज़

[17] Lands of ghosts, monsters and wild animals

हो। और तुम क्या सोचते हो कि वह तुमसे शादी कर लेगी? हा हा हा।" और उसके साथी और भी ज़ोर से हँस दिये।

वह बोला — "देखो तो।"

अगले दिन सुबह जब सूरज उगा तो वह अजगर उस लड़की से शादी करने के लिये चला। रास्ते में वह अपने एक मन्दिर में रुका और काफी जाप करने के बाद वह एक इतने सुन्दर नौजवान के रूप में बदल गया जितना सुन्दर नौजवान दुनियाँ में कभी किसी ने नहीं देखा था।

फिर उसने एक राजकुमार के जैसे कपड़े पहने और शाही तरीके से गाँव की तरफ चला। वह बहुत ही सुन्दर लग रहा था और अपनी सुन्दरता से किसी को भी अपनी तरफ खींच रहा था। उसका चेहरा सुबह के तारे की तरह चमक रहा था।

वह सोच रहा था कि अब समय आ गया है जब उस लड़की को शादी के बारे में एक दो सबक सिखाने चाहिये।

जब वह उस लड़की के घर पहुँचा तो उसका पिता अपने दोस्तों के साथ शराब पी रहा था। उसने उस लड़की के पिता से कहा — "मैं शादी के लिये आपकी बेटी का हाथ माँगने आया हूँ।"

तभी उस लड़की ने भी उस अजनबी को देखा और उसकी तरफ दौड़ी। उसने उसको गले लगा लिया और बोली — "यही वह आदमी है पिता जी जिससे मुझे शादी करनी है।"

अजनबी बोला — "मैं भी तुमसे शादी करना चाहता हूँ। मगर मुझे तुम्हारे पिता से कुछ रस्मी तौर तरीके पूरे करने हैं। फिर मैं अपने घर के कुछ लोगों को बुलाऊँगा और उसके बाद हम शादी कर लेंगे।"

पर लड़की को चैन कहाँ? उसको तो इतना भी सब्र नहीं था कि वह यह इन्तजार करती कि उसके अपने लोग उस अजनबी के बारे में कुछ पता कर लें।

उसने अपना सामान बाँधा और अपने माता पिता को धमकी दी कि अगर उन्होंने उसकी शादी उस अजनबी के साथ नहीं की तो वह उसके साथ भाग जायेगी।

उसके पिता ने उससे उस अजनबी की बात सुनने के लिये कहा और उसको समझाया — "अजनबी अक्लमन्द है और हमारे तौर तरीकों को जानता है। उसके लोगों को आ जाने दो तब हम उससे तुम्हारी शादी की बात कर लेंगे।"

पर लड़की बोली — "नहीं, मैं उसके आदमियों के आने का इन्तजार नहीं कर सकती। मुझे तो अभी जाना है।"

उसके पिता ने उसे बहुत समझाने की कोशिश की, उसकी माँ ने भी उसे बहुत समझाने की कोशिश की और फिर उसके परिवार वालों ने भी उसको समझाने की कोशिश की पर उसने किसी की भी एक नहीं सुनी।

उसने उस अजनबी का हाथ पकड़ा, अपनी एक नौकरानी को अपने साथ लिया, अपना सामान साथ लिया और उस अजनबी के साथ चल दी। उसके पिता को यह जानने का मौका ही नहीं मिला कि वह अजनबी था कौन और आया कहॉ से था।

अजनबी ने भी उस लड़की को साथ लिया, उसका कुछ सामान लिया, उसकी नौकरानी को लिया, मुर्गियॉ लीं, एक बकरा लिया और अपने घर की तरफ चल दिया।

वे कई बाजार वाले दिन[18] तक चलते रहे। उन्होंने सात खेत पार किये, सात नदियॉ पार की पर फिर भी उस अजनबी का घर नहीं आया

लड़की ने अजनबी से पूछा — "आप के घर पहुँचने में अभी कितनी देर है?"

अजनबी ने जवाब दिया — "अब ज़्यादा दूर नहीं है बस हम अब घर पहुँचने ही वाले हैं।"

वह लड़की फिर बोली — "आपका घर काफी दूर है।"

अजनबी बोला — "हॉ, तुम यह कह सकती हो। पर वे सब मेरे रिश्तेदार हैं, हैं न? क्योंकि जैसा कि हमारे बड़े कहते हैं "किसी के लिये कोई गॉव दूर हो सकता है और किसी और के लिये वही गॉव पास हो सकता है। मेरे लिये वह गॉव दूर नहीं है।"

[18] Market days – in villages markets are organized daily, bi-weekly or weekly, thus this may mean that they had walked for several days – maybe at least for 7 days.

पर वे उस अजनबी के गॉव फिर भी नहीं पहुँच सके जब तक कि उन्होंने ज़िन्दा और मरे हुए लोगों की दुनियॉ के बीच की हद पार नहीं कर ली। अब तक वह लड़की और उसकी नौकरानी दोनों थक कर चूर हो चुके थे।

खैर, जल्दी ही वे लोग एक बहुत ही घने जंगल में आ पहुँचे। लड़की को लगा कि वहॉ तक अभी तक कोई भी आदमी नहीं पहुँचा होगा। पर फिर भी वे दोनों उस अजनबी के पीछे पीछे चलती रहीं और वे सब उस जंगल के बीच में आ गये।

जैसे जैसे वे उस घने जंगल में आगे बढ़ रहे थे कि लड़की को रोना आ गया। अजनबी ने उसको धीरज बॅधाया — "चुप हो जाओ, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ और यह काफी है।" पर लड़की का रोना जारी रहा क्योंकि अब उसको उस अजनबी से डर लगने लगा था।

जब वे जंगल के बीच में आ गये तो वहॉ उनको एक गुफा मिली। अजनबी आगे बढ़ा और उसने लड़की और उसकी नौकरानी को उनका बोझा वहीं पास में रख देने के लिये कहा।

दोनों ने अपना अपना बोझा रख दिया और वह अजनबी उस गुफा में घुस गया। वह लड़की और उसकी नौकरानी आश्चर्य से खड़ी देखती रहीं। अन्दर जा कर उस नौजवान ने अपने आपको एक अजगर में बदल लिया।

यह सब देख कर वह लड़की और उसकी नौकरानी दोनों ही बहुत ज़ोर से चिल्ला पड़ीं।

अजगर बोला — "मुझे कुछ खाना चाहिये मुझे भूख लगी है।" और इससे पहले कि वह लड़की कुछ कर सके वह अजगर उस लड़की की नौकरानी को निगल गया और खा गया।

फिर उस अजगर ने अपनी पत्नी को पकड़ा और उसे उस गुफा के एक कमरे में बन्द कर दिया। उसने उस गुफा का ताला लगाया और उसकी चाभी को निगल गया।

अगले कई दिनों तक वह अजगर वे मुर्गियॉ और बकरा खाता रहा जो वह लड़की अपने साथ ले कर आयी थी। उतने दिन वह लड़की उस गुफा के कमरे में भूखी रही।

अजगर ने उसे जान बूझ कर भूखा रखा था ताकि वह थोड़ी कमजोर हो जाये और वह उसे आसानी से निगल सके।

इस बीच में लड़की का पिता बहुत डरा हुआ था। उसका डर और भी ज़्यादा हो गया था जब उसको अपनी लड़की के बारे में बहुत दिनों तक कोई खबर नहीं मिली।

सो वह एक पंडित[19] के पास गया और उससे अपनी लड़की और अपने दामाद के बारे में पूछा।

[19] Translated for the word "Diviner" – they are like our Indian Pandit who tell the future by divine means

पंडित बोला — "तुम्हारी बेटी नदी के बीच में है और अभी भी रो रही है। लगता है कि जैसे साबुन से उसकी ऑखें जल रहीं हैं। वह एक बड़े खतरे में है और केवल कुछ दिनों की मेहमान है।"

यह सुन कर अलाबी बहुत दुखी हुआ। उसने अपने सब होशियार कलाकारों को बुलाया और उनमें से सबसे अच्छे पॉच कलाकारों को चुना।

पहला कलाकार था मास्टर देखने वाला जो दीवार के पार भी देख सकता था और जिसकी नजर किसी भी आदमी की नज़र से ज़्यादा दूर तक देख सकती थी।

दूसरा आदमी था मास्टर रोग[20] जो एक खाते हुए शेर के मुँह में से भी खाना छीन सकता था। तीसरा आदमी था मास्टर शौट[21] जो एक उड़ते हुए तोते को बिना गोली के भी मार सकता था।

चौथा आदमी था मास्टर बढ़ई जो पलक झपकते बिना किसी सामान के नाव बना सकता था। और पॉचवा आदमी था मास्टर नाविक जो नाव को बिना किसी पतवार आदि के खे सकता था।

उसने उन लोगों से कहा — "तुम लोगों का काम मेरी बेटी को ढूँढना है और उसको मेरे पास ज़िन्दा वापस लाना है। अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं तुमको इतना इनाम दूँगा जितना कि तुम सपने में भी नहीं सोच सकते।

[20] Master Rogue
[21] Master Shot

सो वे सब अपने इस काम पर चल दिये। मास्टर देखने वाला उनका गाइड था।

जब वे नदी पर पहुँचे तो मास्टर बढ़ई ने एक नाव बनायी और मास्टर नाविक उसे खेने लगा। घने जंगल में पहुँचने से काफी पहले मास्टर देखने वाले ने एक अजगर नदी के किनारे धूप सेकता हुआ देख लिया।

आगे देखने पर उसको एक लड़की एक गुफा के कोने में बैठी हुई दिखायी दे गयी जहाँ वह ताले में बन्द थी और उसकी चाभी उस अजगर के पेट में थी।

अब मास्टर रोग का काम था। जब अजगर ने करवट बदली तो वह मास्टर रोग के असर से जम सा गया जैसे किसी ने उसके ऊपर कोई जादू डाल दिया हो।

मास्टर रोग ने अजगर का मुँह खोला और उसके पेट में से उस गुफा के कमरे की चाभी निकाल ली, गुफा के उस कमरे को खोला, लड़की को बाहर निकाला और वह चाभी फिर से अजगर के पेट में डाल दी। यह सब उसने अजगर के हिलने से पहले ही कर दिया।

लोगों ने उस लड़की को नाव में बिठाया और मास्टर नाविक नाव खे कर उसे आदमियों की दुनियाँ की तरफ ले कर चल दिया।

जब अजगर अपनी नींद से जागा तो वह लड़की को खाने के लिये गुफा की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने उस लड़की को ढूँढा तो वह लड़की तो उसको कहीं दिखायी नहीं दी।

लड़की को वहाँ न देख कर वह बहुत गुस्सा हो गया और गुस्से में भर कर उसने गुफा का बहुत बड़ा हिस्सा तोड़ फोड़ दिया।

जब वह गुफा के बाहर आया तो उसने आदमियों के पैरों के निशान और उनके कुछ और दूसरे निशान देखे। उसने नदी की लहरों पर भी कुछ देखा जिससे उसको पता चल गया कि कोई उसकी सबसे ज़्यादा कीमती चीज़ ले गया है।

उसने नदी की लहरों पर उसका पीछा ऐसे किया जैसे कि कोई जादू किया हुआ[22] आदमी करता है। बहुत जल्दी ही उसने उन पाँचों लोगों को पकड़ लिया और उन पर कूद पड़ा।

पर मास्टर देखने वाले ने उसको पहले से ही आते हुए देख लिया था और मास्टर शौट को उसके बारे में बता दिया था। मास्टर शौट ने उसको मारने की कोशिश की पर जब तक मास्टर शौट ने उसको मारा तब तक अजगर ने नाव को सैंकड़ों टुकड़ों में तोड़ दिया।

उसका यह नाव को तोड़ना उन आदमियों के लिये बहुत ही घातक था और जब तक कि मास्टर बढ़ई ने दूसरी नाव नहीं बना

[22] Translated for the word “Possessed”

ली तब तक सारे लोग पानी में तैरते रहे। उसके बाद मास्टर नाविक उस नयी नाव को खे कर आदमियों की दुनियॉ में ले आया।

जब वे लोग लड़की को ले कर वापस आ गये तो अलाबी ने उन सबको बहुत इनाम दिया। अब उनमें से हर एक अपने लिये सबसे ज़्यादा इनाम रखना चाहता था।

मास्टर देखने वाला बोला — "अगर मैं न होता तो सबसे पहले तो हमें वह लड़की ही दिखायी नहीं देती।"

मास्टर बढ़ई बोला — "पर वह मैं था जिसने वह नाव बनायी और जिसमें बैठ कर हम वहॉ तक गये। और जब हम करीब करीब डूबने वाले थे तब फिर मैंने ही दूसरी नाव बनायी जो हमको बचा कर यहॉ ले कर आयी।"

मास्टर शौट बोला — "और मैं? अगर मैंने उस अजगर को न मारा होता तो वह हम सबको खा जाता। मुझे इस इनाम में से सब से बड़ा हिस्सा मिलना चाहिये।"

मास्टर रोग बोला — "यह मत भूलो कि मैंने अपनी ज़िन्दगी दॉव पर लगा कर उस अजगर के पेट से चाभी निकाली और उस लड़की को उस गुफा से बाहर निकाल कर लाया। अगर मैं यह सब नहीं करता तो आज हम यहॉ बैठ कर इस इनाम पर नहीं लड़ रहे होते।"

आखीर में मास्टर नाविक बोला — "अब अपने बारे में मैं क्या कहूँ। मैं तो एक मामूली सा नाविक हूँ। मुझे कोई इनाम नहीं चाहिये

सो मैं अपने हिस्से का इनाम तुम लोगों को देता हूँ। तुम लोग इस इनाम के ज़्यादा हकदार हो।"

ऐसा कह कर वह जाने को तैयार हुआ तो बाकी लोगों को लगा कि वे तो बहुत ही मतलबीपन से बात कर रहे थे। उन्होंने सोचा कि सभी लोगों ने इस काम में अपना अपना काम किया है इसलिये सबका बराबर का हिस्सा है, न कोई कम और न कोई ज़्यादा।

तो मास्टर रोग बोला — "ओ साथी, वापस आओ। हम लोग एक पहेली के बहुत सारे टुकड़े हैं जिनको साथ रखने पर ही वह पहेली यानी कि खोयी हुई लड़की की पहेली सुलझी है।

हम में से न तो कोई ज़्यादा है और न कोई कम। आओ हम अपना इनाम बराबर बराबर बॉट लेते हैं क्योंकि बन्दूक के जब तक सारे हिस्से काम न करें उससे गोली नहीं छूटती।"

हालॉकि उस लड़की ने "जो कभी शादी नहीं करना चाहती थी" अपना सबक सीख लिया था और अपना तरीका भी बदल लिया था पर फिर भी गॉव वाले उसके बारे में अपना विचार नहीं बदल पाये थे।

दूसरे यह कि वह लड़की अब इतनी बड़ी हो गयी थी कि उसकी सुन्दरता भी अब ऐसे मुरझा गयी थी जैसे किसी गरमी के फूल को पाला मार जाये।

सो जैसा उसका नाम था वह फिर अपनी सारी ज़िन्दगी वैसी की वैसी ही रही यानी फिर उसकी शादी नहीं हुई।

5 होशियार राजकुमारी[23]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के ऐस्टोनिया देश में कही सुनी जाती है।

यह बात वहाँ के राजा को ही नहीं बल्कि हर एक आदमी को मालूम थी कि राजा की बेटी बहुत सुन्दर थी।

और राजा को ही नहीं बल्कि हर एक आदमी को यह भी मालूम था कि राजकुमारी हाजिर जवाब और बोलने में बहुत ही चतुर थी। वह अपनी बातों से किसी को भी नहीं बल्कि राजा को भी चुप कर सकती थी।

यह सब देखते हुए यह जाहिर था कि राजा को उससे बहुत परेशानी थी। और वह परेशानी यह थी कि उसकी बेटी से कोई शादी नहीं कर सकता था जब तक कि उसकी बेटी की ज़बान काबू में न हो।

सो राजा ने वह सब कुछ किया जो वह उन हालात में कर सकता था। इस सिलसिले में उसने एक ऐलान कर दिया कि वह अपनी बेटी की शादी उसी से करेगा जो उसको बहस में हरायेगा।

[23] The Clever Princess - a folktale from Estonia, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/estonia/estonia_folk_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin

यह सब आसान तो नहीं था पर फिर भी बहुत से राजकुमार वहॉ अपनी अपनी किस्मत आजमाने आये। और इतने सारे राजकुमार वहॉ आये कि लोग देख कर दंग रह गये।

जैसे ही एक उम्मीदवार हार कर महल छोड़ कर जाता था दो और आ जाते थे।

जब इतने सारे राजकुमार राजकुमारी का हाथ मॉगने आ रहे थे तो राजकुमारी की दासी को जैसे वह पहले बनाया करती थी राजकुमारी के बालों को वैसे ही बाल बनाने का समय ही नहीं मिल पा रहा था।

राजा की इस घोषणा से पहले राजकुमारी के बाल बहुत सुन्दर थे। पर अब समय न मिलने की वजह से उनकी खूबसूरती कम होती जा रही थी।

और जब से यह बातचीत शुरू हुई थी तब से, क्योंकि राजकुमार बहुत सारे थे इसलिये यह बातचीत दिन के साथ रात में भी चलती थी, तो राजकुमारी को पूरा आराम भी नहीं मिल पाता था इसलिये उसकी ऑखों के नीचे गहरे गड्ढे भी पड़ गये थे।

बातचीत में हर एक के साथ वह जीत जाती इसलिये हर राजकुमार को महल छोड़ कर जाना ही पड़ जाता। इस चक्कर में महल के रोजाना के काम काज में रुकावट आने लगी क्योंकि महल में रोज बहुत सारे आदमी आते।

हालत इतनी खराब हो गयी कि राजा को एक और ऐलान करवाना पड़ा — "कोई भी नौजवान जो राजकुमारी से शादी की इच्छा से महल में आता है वह अगर राजकुमारी से बहस में हार गया तो उसको कड़ी से कड़ी सजा दी जायेगी।"

राजा की इस नयी घोषणा से आने वाले नौजवानों की गिनती में एकदम से बहुत उतार आ गया। पहली बार राजकुमारी बहुत दिनों के बाद मुस्कुरायी। बहुत दिनों के बाद उसने अपने बाल अपने तरीके से बनवाये। पर राजा के चेहरे पर मुस्कुराहट नहीं थी।

वह सोचने लगा — "अगर मेरी बेटी को कोई नहीं हरा सका तो मेरी बेटी तो कुँआरी ही रह जायेगी।"

उसी समय कुछ ऐसा हुआ कि एक नौजवान भिखारी ने राजा का यह ऐलान सुना तो उसने सोचा "मैं राजकुमारी से बहस में अच्छा क्यों नहीं हो सकता। अगर मैं जीत गया तो मुझे महल में रहने को मिल जायेगा और अगर मैं हार गया तो देखता हूँ कि राजा मुझे क्या सजा देता है।"

यह सोच कर वह भिखारी राजा के महल की तरफ चल दिया। जब वह जा रहा था तो रास्ते में उसने एक मरा हुआ कौआ देखा। उसने उसको देख कर मजा लेते हुए सोचा "क्या पता यह किस काम आ जाये।" और उसने वह कौआ अपनी जेब में रख लिया।

वह फिर महल की तरफ चल दिया। आगे जा कर उसको बीच सड़क पर पड़ा एक पुराना टब मिला।

उसको देख कर उसे याद आयी कि उसकी माँ ने कहा था कि कोई भी चीज़ बरबाद नहीं करनी चाहिये। चाहे वह टूटा हुआ टब ही क्यों न हो, क्या पता यह कब काम आ जाये। यही सोच कर उसने वह टब उठा कर अपनी पोटली में रख लिया और फिर आगे चल दिया।

महल जाते समय उसको कई और चीज़ें भी मिलीं सो उसने वे सब चीज़ें अपनी पोटली में उठा कर रख लीं और महल की तरफ चलता रहा।

फिर उसको एक डंडा मिला एक हूप[24] मिला और एक बूढ़े बकरे का सींग मिला। हर चीज़ को उठाते हुए उसने यही सोचा कि पता नहीं कौन सी चीज़ कब काम आ जाये इसलिये उसने वे सब चीज़ें उठा कर अपनी पोटली में रख लीं।

सो जब तक वह महल पहुँचा उसकी पोटली कई चीज़ों से भर गयी थी। जब वह महल के दरवाजे पर पहुँचा तो वहाँ खड़े दरबान ने उससे पूछा — "तुम यहाँ क्या कर रहे हो?"

उस नौजवान ने जवाब दिया — "मैं यहाँ राजकुमारी जी से मिलने और उनसे शादी करने आया हूँ। क्या तुम अभी भी मुझसे बदतमीजी से बात करोगे जबकि मैं तुम्हारा होने वाला राजकुमार हूँ?"

[24] Hoop – a large ring which is normally used to put on waist and turn it around it fast.

यह सुन कर तो वह नौकर बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और बोला — "हमारी इतनी सुन्दर राजकुमारी तुमसे शादी क्यों करने लगी? इससे पहले कि राजा के सिपाही तुमको देख लें तुम यहॉ से भाग जाओ।"

पर वह नौजवान भिखारी तो वहॉ उस नौकर की ना सुनने के लिये नहीं आया था। सो उसने उससे प्रार्थना की कि वह कम से कम राजकुमारी को यह तो बता दे कि कोई उससे शादी करने की इच्छा से खड़ा है।

काफी मिन्नतों के बाद वह नौकर उसको अन्दर ले जाने के लिये राजी हो गया। राजकुमारी को भी कई हफ्ते बीत गये थे किसी से बहस किये सो उसने उस नौजवान की प्रार्थना मान ली और उसको अन्दर बुला भेजा।

जैसे ही उस नौजवान ने राजकुमारी को देखा तो बोला — "सलाम, ओ मेरी राजकुमारी जिसके हाथ और दिल दोनों बरफ के हैं।"

राजकुमारी ने तुरन्त ही उसको काटा — "मेरे दिल के साथ कोई गड़बड़ नहीं है। और जहॉ तक मेरे हाथों का सवाल है वे इतने गरम हैं कि किसी कौए को भी भून सकते हैं।"

राजकुमारी ने सोचा कि उसकी यह बात उस नौजवान को चुप कर देगी पर उसको तो यह पता ही नहीं था कि वह नौजवान कितना होशियार है या फिर उसकी पोटली के अन्दर क्या है।

उस नौजवान ने आश्चर्य से पूछा — "क्या कहा? आपके हाथ एक कौए को भूनने के लिये काफी गरम हैं? यह तो अच्छा है एक कौआ मेरे पास भी है। देखते हैं कि आपके हाथ इस कौए को भून सकते हैं या नहीं।"

राजकुमारी भी इतनी बेवकूफ नहीं थी। उसको आश्चर्य तो बहुत हुआ कि उसके पास कौआ कहाँ से आया पर उसने उसको अपने चेहरे पर झलकने नहीं दिया। वह हार मानने वाली भी नहीं थी।

वह बोली — "हम उसको अभी और यहीं भूनेंगें अगर हमारे पास कोई टब हो जिसमें हम उस चिड़िया को रख कर भून सकें।"

नौजवान भिखारी ने पूछा — "तो आपको टब चाहिये? इत्तफाक की बात है कि मेरे पास टब भी है। अरे वह यहीं तो था।" कह कर वह अपनी पोटली में टब ढूँढने लगा।

जब वह भिखारी अपनी पोटली में टब ढूँढ रहा था तब भी वह राजकुमारी शान्त बैठी थी।

जब भिखारी ने वह टब निकाला तो राजकुमारी ने उसमें एक दरार देख ली तो वह हँस कर बोली — "तुम क्या सोचते हो कि किसी टूटे बरतन में चिड़िया पकेगी? यह तो शाह की बेइज़्ज़ती है।"

वह नौजवान मुस्कुराया और बोला — "ओ मेरी राजकुमारी, इस दरार को बन्द करने के लिये मेरे पास एक हूप और एक डंडा है।"

यह सुन कर राजकुमारी की बॉयी ऑख फड़कने लगी और फिर तो वह फड़कनी रुकी ही नहीं।

राजकुमारी के पेट में हलचल सी होने लगी। उसने सोचा इस भिखारी के पास तो सब चीज़ों का जवाब है पर वह इस बात को अभी भी मानना नहीं चाहती थी।

वह बोली — "ओ भिखारी, तुम तो बड़े चिकने हो। तुम मेरे शब्दों को टेढ़ा कर देते हो और तुम किसी भी तरह फॉसे नहीं जाते।"

भिखारी मुस्कुराया — "चिकना और साथ में टेढ़ा भी। ओ राजकुमारी शायद ऐसा कुछ मेरी पोटली में भी है। हॉ यह है न वह। देखिये बकरे का यह टूटा हुआ सींग चिकना भी है फिर भी यह कितनी सुन्दरता से मुड़ा हुआ है। है न राजकुमारी जी?"

भिखारी अपने सवाल के जवाब का इन्तजार कर रहा था पर वहॉ तो कोई जवाब नहीं था। राजकुमारी इसके आगे कुछ नहीं कह सकी।

राजा के साथ सारे लोग आश्चर्य में पड़ गये। राजा ने अपने ऐलान के मुताबिक अपनी बेटी की शादी उस भिखारी से कर दी। सब उस शाही शादी में शामिल हुए।

और फिर उसके बाद तो किसी को कुछ याद ही नहीं रहा। शादी के बाद जब मेहमान जाने लगे तो राजा ने एक और ऐलान किया —

"मेरे मेहमानों, अपने दामाद से मैंने एक सबक सीखा है कि कभी यह मत कहो कि तुम अपना उद्देश्य हासिल नहीं कर सकते और अपने सपने पूरे नहीं कर सकते। अगर तुम अपनी अक्लमन्दी इस्तेमाल करो तो तुम सब कुछ हासिल कर सकते हो।"

6 घमंडी राजकुमारी[25]

बहुत पुरानी बात है कि आयरलैंड में किसी जगह एक राजा राज करता था। उसकी एक बेटी थी जो सुन्दर तो बहुत थी पर साथ में घमंडी भी बहुत थी।

जब वह शादी के लायक हुई तो राजा ने कई राजकुमारों को बुलवाया ताकि वह किसी राजकुमार को पसन्द कर ले तो उससे उस की शादी कर दी जाये पर वह सब में कोई न कोई बुराई बता देती थी और उससे शादी करने से इनकार कर देती थी।

एक बार राजा ने कुछ राजकुमारों को बुलाया और अपनी बेटी से उनमें से एक को चुनने के लिये कहा। परन्तु इस बार भी वैसा ही हुआ।

उसने हर राजकुमार में कोई न कोई खोट निकाल दिया और शादी से इनकार कर दिया। किसी को लम्बा ताड़ बताया तो किसी को छोटा बौना। किसी को मोटा बताया तो किसी को छड़ी।

अन्त में वह एक सुन्दर से राजकुमार के पास आ कर खड़ी हुई तो उसमें वह कोई खोट न निकाल सकी। वह कुछ परेशान सी हो गयी। अब वह क्या करे। तभी उसको उस राजकुमार की ठोड़ी के नीचे एक बाल दिखायी दे गया।

[25] Proud Princess – a folktale of Ireland, Europe

बस फिर क्या था उसको मौका मिल गया, वह बोली — "मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती ओ दढ़ियल।" और चली गयी।

यह सब सुन कर राजा बहुत परेशान हुआ। उसने अपनी बेटी से कहा — "बेटी तुम हर किसी में ऐब निकालती हो अब तुम्हारी सजा यही है कि कल सुबह जो भी पहला भिखारी या गाने वाला मेरे दरवाजे पर आयेगा मैं तुम्हारी शादी उसी से कर दूँगा।"

अगले दिन सुबह ही एक भिखारी फटे कपड़े पहने, कन्धों तक बाल बढ़ाये और लम्बी सी दाढ़ी रखे राजा के दरवाजे पर आ कर गीत गाने लगा।

जब उसका गाना खत्म हो गया तब दरबार का दरवाजा खोला गया और उसको अन्दर बुला कर उससे राजकुमारी की शादी कर दी गयी। राजकुमारी बहुत रोयी चिल्लायी पर राजा ने उसकी एक न सुनी।

शादी के बाद राजा ने उस भिखारी को सोने की **5** मुहरें दीं और कहा — "ये **5** मुहरें तुम्हारे लिये हैं। अपनी पत्नी को लो और मेरी नजरों से दूर हो जाओ। और फिर कभी अपनी और अपनी पत्नी की सूरत मुझे मत दिखाना।"

वह भिखारी वह **5** मुहरें और अपनी पत्नी को ले कर वहाँ से चला गया। राजकुमारी इस सबसे बहुत दुखी थी पर कुछ कर नहीं सकती थी। केवल एक ही चीज़ उसको इस समय तसल्ली दे रही थी – वे थे उसके पति के प्यार भरे शब्द और उसका नम्र बरताव।

चलते चलते वे एक जंगल में पहुँचे। राजकुमारी ने पूछा — "यह जंगल किसका है?"

उसका पति बोला — "यह जंगल उसी राजकुमार का है जिसको कल तुमने दढ़ियल कहा था।"

यही जवाब उसने रास्ते में पड़े मैदानों, खेतों और अन्त में आने वाले एक शहर के बारे में भी दिया।

यह सुन कर राजकुमारी सोचने लगी कि "मैं भी कितनी बेवकूफ थी कि मैंने उस अच्छे खासे राजकुमार से शादी नहीं की। केवल उसकी दाढ़ी पर उगे एक बाल की वजह से ही मैंने उससे शादी करने से मना कर दिया।"

अन्त में वे एक छोटे से घर के सामने आ पहुँचे तो राजकुमारी ने पूछा — "यह तुम मुझे कहाँ ले आये हो?"

पति बोला — "पहले यह घर मेरा था आज से यह घर तुम्हारा है।"

राजकुमारी कुछ रुआँसी सी हो गयी पर वह बहुत थकी हुई और भूखी थी सो वह उसके साथ उस घर के अन्दर चली गयी।

पर उस घर में न तो खाने की मेज सजी हुई थी और न ही कहीं आग ही जल रही थी। आग जलाने और फिर खाना बनाने में उस को पति की सहायता करनी पड़ी।

फिर दोनों ने मिल कर घर साफ किया, खाना खाया और सो गये। राजकुमारी थकी थी सो वह तो बिना शाही पलंग के ही जैसे घोड़े बेच कर सो गयी।

अगले दिन उसने अपनी नयी पत्नी को सूती कपड़े की एक पोशाक ला कर दी। जब उसका घर का काम खत्म हो गया तो पति ने उसको कुछ जंगली घास ला कर दी और उसको टोकरियॉ बुनना बताया।

टोकरियॉ बनाते समय उस घास की नोकें राजकुमारी के हाथ में गड़ रहीं थीं जिनसे खून निकल रहा था। वह दर्द से रो पड़ी।

इसके बाद उसके पति ने उससे अपने कुछ कपड़े मरम्मत करने के लिये कहा तो सुई उसके हाथों में चुभने लगी और उनसे भी खून निकलने लगा। वह फिर रो पड़ी।

भिखारी पति से राजकुमारी का रोना नहीं देखा गया तो उसने उसके लिये कुछ मिट्टी के बरतन ला दिये और उनको बाजार में बेच आने के लिये कहा। यह तो उसके लिये बहुत ही मुश्किल काम था परन्तु क्या करती।

वह उनको ले कर बाजार गयी। वह वहॉ खड़ी इतनी सुन्दर और उदास लग रही थी कि दोपहर से पहले ही उसके सारे बरतन बिक गये। उसके पति को इस बात से बड़ी खुशी हुई।

पति ने उसको अगले दिन बरतन बेचने के लिये फिर बाजार भेजा। पर लगता था कि वह दिन उसके लिये अच्छा नहीं था। एक

शराबी उस दिन बाजार में आया और उसके सारे बरतन तोड़ कर चला गया।

राजकुमारी रोती हुई घर पहुँची तो वह भिखारी उसकी कहानी सुन कर बहुत दुखी हुआ और बोला — "तुम इनमें से किसी काम के लायक नहीं हो। मैं ऐसा करता हूँ कि मैं यहाँ के राजा के रसोइये को जानता हूँ तुमको मैं उससे कह कर शाही रसोई में काम दिलवा देता हूँ।"

बेचारी राजकुमारी एक बार फिर शरम से पानी पानी हो गयी पर वह क्या करती वह तो राजकुमारी थी उसको तो यह सब आता नहीं था।

पति ने उसको रसोइये से कह कर उसको शाही रसोई में काम दिलवा दिया था। वहाँ उसको काफी काम दिया जाता था। काम खत्म करके वह रात को घर चली जाती थी। जाते समय उसकी पोशाक की दोनों जेबें बची खुची खाने की चीज़ों से भरी रहतीं।

एक हफ्ते बाद उसने देखा कि रसोई में खूब हलचल मची हुई है। पूछने पर पता चला कि उस दिन राजा की शादी हो रही थी पर आश्चर्य की बात यह थी कि दुलहिन का पता ही नहीं था कि वह है कौन।

रोज की तरह रसोइये ने उस दिन भी उसकी जेबें खाने की चीज़ों से भर दीं और बोला — "चलो, तुम्हारे जाने से पहले एक बार राजा के कमरे को देख आयें कि वहाँ क्या हो रहा है।"

वे दरवाजे के पास आ कर कमरे में झॉकने को ही थे कि उसमें से राजा निकला और वह कोई दूसरा राजा नहीं बल्कि वही दढ़ियल राजा खुद ही था जिसको राजकुमारी ने पहले शादी करने से मना कर दिया था।

राजा रसोइये से बोला — "तुम्हारी इस सुन्दर नौकरानी को मेरे कमरे में झॉकने की कोशिश करने की सजा तो भुगतनी ही पड़ेगी। इसको मेरे साथ नाचना पड़ेगा।"

इससे पहले कि राजकुमारी हॉ या न कहती दढ़ियल राजा ने उसका हाथ पकड़ा और उसे कमरे के अन्दर ले गया। साजिन्दों ने उनके नाच के साथ साज बजाने शुरू किये और दोनों उस धुन पर नाचने लगे।

राजा को उसके साथ नाचते कुछ पल भी नहीं बीते थे कि नाचते में उसकी जेबों से खाने का सामान निकल कर नीचे फर्श पर गिर गया। वहॉ बैठे हर आदमी के मुँह से एक चीख सी निकल गयी।

राजकुमारी तो यह सब देख कर शरम से पानी पानी हो गयी और अपना हाथ छुड़ा कर दरवाजे की तरफ भागी पर राजा ने उसको तुरन्त ही पकड़ लिया और उसे बड़े कमरे के पीछे वाले कमरे में ले गया और बोला — "प्रिये, क्या तुम मुझे नहीं जानतीं? मैं वही दढ़ियल राजा हूँ जिससे तुमने कुछ दिन पहले शादी करने से इनकार कर दिया था।

और मैं ही तुम्हारा पति भी हूँ जो तुमको भिखारी का वेश रख कर तुमसे शादी कर लाया। और वे मेरे ही आदमी थे जो पहले दिन तुम्हारे सारे मिट्टी के बरतन खरीद कर ले गये। और मैं ही वह शराबी हूँ जिसने बाजार में तुम्हारे मिट्टी के बरतन तोड़ दिये थे।

जब तुम्हारे पिता ने तुम्हारी शादी मुझसे की थी वह मुझे अच्छी तरह जानते थे। और हम लोगों ने यह सब नाटक मिल कर केवल तुम्हारा घमंड दूर करने के लिये खेला था।"

राजकुमारी के दिल में शरम, डर और खुशी सभी विचार एक साथ आ रहे थे पर शायद पति के लिये प्रेम पहली बार इन सबसे ऊपर था क्योंकि यह सब सुन कर वह राजा के सीने पर अपना सिर रख कर बच्चों की तरह रो पड़ी और बोली "मुझे माफ कर दो दढ़ियल राजा।" राजा ने उसको धीरज बँधाया और उसको अपनी दासियों को सौंप दिया।

दासियाँ उसको एक अलग कमरे में ले गयीं और कुछ देर बाद ही उसको सजा कर ले आयीं। सब लोग बैठे यही सोच रहे थे कि रसोई में काम करने वाली इस लड़की का अब क्या हाल होगा। परन्तु उन्होंने जब उसी लड़की को राजा के साथ रानी के रूप में सजे हुए आते देखा तो वे भौंचक्के से रह गये।

अब तक राजकुमारी के माता पिता भी वहीं आ गये थे। दोनों की शादी हो गयी। सारे महल में खुशी की लहर दौड़ गयी।

7 लड़की जो आम चीज़ों से सन्तुष्ट नहीं थी[26]

एक बार एक लड़की थी जो आम बातों से सन्तुष्ट नहीं होती थी। उसके पिता उसके लिये कोई भी दुलहा ढूँढने में नाकामयाब रहे थे क्योंकि वह किसी लड़के को पसन्द ही नहीं करती थी।

वह किसी को मोटा बताती तो किसी के लिये वह कहती — "आपने देखा उसके जूते कितने गन्दे थे।" तो किसी के लिये कहती — "मुझे उसके बोलने का ढंग नहीं अच्छा लगा।"

एक रात जब उनके घर में माँ शाम का खाना बनाने के बाद आग बुझाने वाली थी कि एक अजनबी नौजवान ने दरवाजा खटखटाया।

माँ ने कहा — "अन्दर आओ।"

पर वह नौजवान वहीं बाहर ही खड़ा रहा और उस लड़की की तरफ देख कर बोला — "मैं तुमसे शादी करके तुम्हें ले जाने आया हूँ।"

यह नौजवान बहुत सुन्दर था। आग की रोशनी में उसका चेहरा चमक रहा था। कमर में उसने काले और पीले रंग की चौड़ी सी पेटी बाँध रखी थी जो पानी की तरह चमक रही थी। उसके सिर पर

[26] The Girl Who Was Not Satisfied with Simple Things – a folktale from Iroquois Tribe, Native Americans, America. Adapted from the Website : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/The-Girl-Who-Was-Not-Satisfied-With-Simple-Things-Iroquois.html

दो लम्बे पंख लगे हुए थे और उसकी चाल भी शान शौकत वाली थी।

उस लड़के की बात सुन कर लड़की की मॉ कुछ परेशान हो गयी। वह अपनी बेटी से बोली — "मेरी बेटी, तुम तो इस पूरे गॉव में से किसी भी लड़के से शादी नहीं कर रही थीं फिर क्या तुम इस अजनबी नौजवान से शादी करोगी जिसकी जात पॉत का भी तुमको पता नहीं है?"

पर उस लड़की से तो कुछ कहने से फायदा ही नहीं था क्योंकि उसको तो वह लड़का देखते ही पसन्द आ गया था। उसने अपने कपड़े बॉधे और उस रात में उस सुन्दर अजनबी के पीछे पीछे चल दी।

वह लड़की उस अजनबी के पीछे पीछे अॅधेरे में थोड़ी दूर तो चली पर फिर उसको डर लगने लगा। उसको लग रहा था कि वह अपनी मॉ का घर छोड़ कर इस अजनबी के साथ अकेली क्यों चली आयी जबकि वह तो इसको जानती भी नहीं।

उसी समय उसके पति ने अॅधेरे में फुसफुसाते हुए लड़की से कहा — "डरो नहीं। हम अभी थोड़ी ही देर में अपने लोगों में आ जायेंगे।"

लड़की बोली — "पर यह कैसे हो सकता है। मुझको तो लगता है कि हम नदी की तरफ जा रहे हैं।"

उस नौजवान ने फिर उसकी बॉह पकड़ी और बोला — "बस मेरे पीछे पीछे आ जाओ। इस पहाड़ी के नीचे जा कर ही मेरे आदमियों की जगह है।"

दोनों एक पहाड़ी के नीचे उतरे और एक घर के पास आ गये जिसके दरवाजे के ऊपर दो बड़े बड़े सींग लगे हुए थे जैसे कि किसी बड़े बारहसिंगे के सिर पर लगे रहते हैं।

पति बोला — "यही हमारा घर है। अभी तुम सो जाओ कल तुम मेरे लोगों से मिलना।"

लड़की वहॉ सारी रात डरती रही। उसने घर के बाहर अजीब अजीब आवाजें सुनीं। लड़की ने महसूस किया कि उस घर में मछली की बू भी आ रही थी।

लड़की को रात भर नींद नहीं आयी। वह सारी रात अपनी ऑखें खोले और अपने को कम्बल में कस कर लपेटे सुबह का इन्तजार करती रही।

पर जब सुबह हुई तो सूरज ही नहीं निकला। सॉवला आसमान केवल हल्की हल्की रोशनी से भरा हुआ था।

उसके पति ने उसको पहनने के लिये एक नयी पोशाक दी। वह पोशाक उसके पति की पोशाक की तरह से सीपी के मोतियों[27] से सजी हुई थी।

[27] Translated for the word "Wampum" – a kind of shell beads indigenous to natives of North America

पोशाक दे कर उस नौजवान ने उस लड़की से कहा कि इससे पहले कि वह उसके आदमियों से मिले वह उस पोशाक को पहन ले।

पर वह लड़की इतनी डरी हुई थी कि वह उस पोशाक को हाथ भी नहीं लगा पा रही थी। वह बोली — "इस पोशाक में से तो मछली की बू आ रही है। मैं इसे नहीं पहनूँगी।"

उसका पति यह सुन कर गुस्सा तो हुआ पर बोला कुछ नहीं।

कुछ देर बाद ही घर के दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए वह फुसफुसाया — "मुझे कुछ देर के लिये बाहर जाना है। तुम यहाँ से कहीं जाना नहीं और जो कुछ भी देखो उससे डरना भी नहीं।"

इतना कह कर वह घर से बाहर चला गया। वह लड़की वहीं अपनी किस्मत पर रोती हुई सी बैठी रह गयी।

वह सोचने लगी कि अगर वह आम लोगों की तरह से आम चीज़ों से खुश रहती तो आज उसके साथ ऐसा न हुआ होता।

उसने अपनी माँ के घर में आग के बारे में सोचा। उसने उन सादा अच्छे दिल वाले आदमियों के बारे में सोचा जिन्होंने कभी

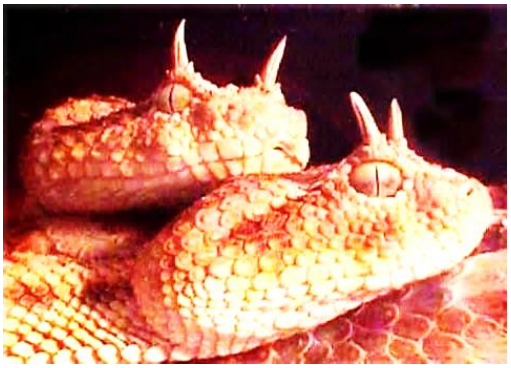

उससे शादी करने की इच्छा प्रगट की थी।

उसी समय सींग वाला एक बड़ा साँप घर के दरवाजे में से अन्दर घुसा। तो वह तो डर के मारे वहीं जमी की जमी

बैठी रह गयी। वह उसके पास आया और उसकी ऑखों में देर तक देखता रहा।

उसके शरीर के चारों तरफ चमकीले काले और पीले रंग की धारियॉ थीं। कुछ देर बाद वह वहॉ से चला गया।

उसके जाने के बाद वह लड़की उठ कर उसके पीछे पीछे गयी और बाहर की तरफ झॉका। उसने देखा कि उसके चारों तरफ तो सॉप ही सॉप हैं। कुछ चट्टानों पर लेटे पड़े थे और कुछ गुफा के बाहर रेंग रहे थे।

अब उसको लगा कि उसका पति जो दिखायी दे रहा था वह वह नहीं था। वह तो आदमी भी नहीं था वह आदमी की शक्ल में सॉप था। अब यह लड़की बेवकूफ तो थी पर वह थी बहुत हिम्मत वाली।

वह जान गयी थी कि उसको अपने पति की दी हुई जादुई पोशाक नहीं पहननी चाहिये वरना वह खुद भी सॉप बन जायेगी। पर वह उससे बचे कैसे?

वह सोचती रही और सोचती रही पर क्योंकि वह रात भर नहीं सोयी थी सो वह ऑख बन्द करके लेट गयी। न जाने कब उसको नींद आ गयी और वह सो गयी। जब वह सो रही थी तो उसको लगा कि उसके सपने में एक बूढ़ा आदमी आया।

वह बड़ी साफ और गहरी आवाज में बोला — "मेरी बच्ची, मैं तुम्हारी सहायता करूँगा।"

लड़की बोली — "पर बाबा मैं क्या करूँ?"

बूढ़े ने जवाब दिया — "तुम तो बस जो मैं कहूँ वह करो। तुम तुरन्त ही यह जगह छोड़ दो और गॉव के किनारे की तरफ भाग जाओ। वहॉ तुमको एक ऊँची पहाड़ी मिलेगी।

तुम उस पहाड़ी पर चढ़ जाना और पीछे मुड़ कर नहीं देखना नहीं तो तुम्हारे पति के लोग तुमको रोक लेंगे। जब तुम उस पहाड़ी के ऊपर पहुँच जाओगी तब मैं तुम्हें वहॉ मिल जाऊँगा।"

जब लड़की की ऑख खुली तो उसको लगा कि उसको उस बूढ़े की बात मान लेनी चाहिये। सो वह बाहर गयी पर तभी उसने अपने पति को घर आते देखा। अभी भी वह एक सुन्दर नौजवान के रूप में था।

उसको मालूम था कि उसको तुरन्त ही यहॉ से भाग जाना चाहिये नहीं तो वह यहॉ उमर भर के लिये कैद हो जायेगी।

सो वह एक चिड़िया की तरह उड़ कर अपने पति के घर के दरवाजे से बाहर निकल गयी और उस पहाड़ी की तरफ भाग गयी।

उसके पीछे पीछे उसका पति चिल्लाया — "वापस आ जाओ।"

पर वह लड़की तो चलती चली गयी, चलती चली गयी और उसने वापस मुड़ कर भी नहीं देखा। वह जितनी तेज़ भाग सकती थी उतनी तेज़ भागी जा रही थी।

अपने पीछे उसने सरकंडों के पेड़ों[28] में सरसराहट की आवाज भी सुनी पर फिर भी उसने वापस मुड़कर नहीं देखा। पहाड़ी उसके पास आती जा रही थी।

उसने अपने पति की एक बार फिर फुसफुसाहट सुनी — "वापस आ जाओ ओ मेरी पत्नी, वापस आ जाओ। आओ मेरे लोगों से मिल लो।" पर अब वह पहाड़ी के पास तक आ पहुँची थी और बस अब उस पर चढ़ने ही वाली थी।

वह उस बूढ़े के वायदे को याद करके अपनी पूरी ताकत लगा कर उस पहाड़ी पर चढ़ती गयी चढ़ती गयी। वह अब उस पहाड़ी के ऊपर तक आ पहुँची थी। वहाँ आ कर उसको लगा कि बस अब वह बूढ़ा आदमी आ कर उसको सँभाल ले।

ऐसा ही हुआ वहाँ उस बूढ़े आदमी ने उसके हाथ पकड़ कर उसको उठा लिया। अब उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उसको पता चला कि वह तो नदी पार करके उस पहाड़ी के ऊपर तक चढ़ आयी है।

उसके पीछे बहुत सारे सींगों वाले साँप थे। उस बूढ़े आदमी ने उन साँपों को भगाने के लिये बहुत सारी बिजली उनकी तरफ फेंकी

[28] Translated for the word "Reed"

जो उन सॉपों को जा कर लगी। अब उसको पता चल गया कि वह बूढ़ा आदमी हैनो था "बिजली वाला"[29]।

इसके बाद पूरे आसमान में बिजली चमकने लगी बादल गरजने लगे। उन सॉपों ने नदी पार कर भागना चाहा पर हैनो की बिजली ने सबको मार डाला।

कुछ देर बाद तूफान थम गया और वह लड़की वहॉ बारिश में भीगी खड़ी रह गयी।

हैनो ने उस लड़की की तरफ देखा और बोला — "मेरी बच्ची, तुम बहुत बहादुर हो। तुमने इन सब राक्षसों को इस धरती पर से हटाने में मेरी बड़ी सहायता की है। शायद मैं तुम्हें फिर बुलाऊँ क्योंकि तुम्हारे इस काम ने तुमको और ज़्यादा ताकतवर बना दिया है।"

उसके बाद उस बूढ़े ने अपना हाथ उठाया तो एक बादल का टुकड़ा धरती पर आ गया। वह और वह लड़की दोनों उस बादल पर चढ़ गये और उस लड़की के गॉव आ गये।

ऐसा कहा जाता है कि फिर उस लड़की ने उस आदमी से शादी कर ली जिसका दिल बहुत अच्छा था। दोनों के कई बहुत अच्छे अच्छे बच्चे भी हुए। यह भी कहा जाता ही कि उसका बाबा, यानी हैनो, भी उससे मिलने के लिये उसके घर कई बार आया।

[29] Heno, the Thunderer

वह लड़की भी कई बार अपने बाबा के साथ उड़ कर गयी और धरती के बोझ को उतारने उसकी सहायता की। जब वह बूढ़ी हो गयी तो उसने अपने पोतों और पोतियों को समझाया कि आदमी को हमेशा आम चीज़ों से ही खुश रहना चाहिये।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html
19 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2018/12/2.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
दिसम्बर **2018**